

सामाजिक विज्ञान

(इतिहास)

अध्याय-3: दिल्ली के सुल्तान



दिल्ली का निर्माण- एक राजधानी

दिल्ली केवल बारहवीं शताब्दी ईस्वी में देश के केंद्र के रूप में विकसित हुई। शहर पहले तोमर राजपूतों के अधीन राजधानी बन गया, जिन्हें बाद में अजमेर के चौहानों ने हराया था। इन दो राजवंशों के तहत, दिल्ली एक वाणिज्यिक केंद्र बन गया। आम लोगों के अलावा, शहर में जैन व्यापारियों का निवास था जिन्होंने कई मंदिरों का निर्माण किया। देहलीवाल नामक सिक्के ढाले गए और व्यापक रूप से उपयोग किए जाने लगे।

तेरहवीं शताब्दी की शुरुआत में दिल्ली सल्तनत के शासन के तहत यह शहर आगे बढ़ गया।

दिल्ली सल्तनत- प्रमुख शासक और उनकी नीतियां

दिल्ली सल्तनत के विभिन्न राजवंशों और महत्वपूर्ण शासकों की सूची निम्नलिखित है जिन्होंने दिल्ली और आसपास के क्षेत्रों पर शासन किया।

राजा का नाम	राजवंश	समय
कुतुबुद्दीन ऐबक	गुलाम	1206-1210
शम्सुद्दीन इल्तुतमिश	गुलाम	1210-1236
रज़िया	गुलाम	1236-1240
गयासुद्दीन बलबन	गुलाम	1266-1287
जलालुद्दीन खिलजी	खिलजी	1290-1296
अलाउद्दीन खिलजी	खिलजी	1296-1316
गयासुद्दीन तुगलक	तुगलक	1320-1324
मुहम्मद तुगलक	तुगलक	1324-1351
फिरोज शाह तुगलक	तुगलक	1351-1388
खिज़्र खान	सैय्यद	1414-1421
बहलुल लोदी	लोदी	1451-1489

दिल्ली सुल्तानों के शासन के स्रोत

• इस काल के मुख्य स्रोत सिक्के, शिलालेख और वास्तुकला हैं। इस अवधि का एक महत्वपूर्ण स्रोत फारसी भाषा (दिल्ली सल्तनत के तहत आधिकारिक भाषा) में लिखा गया इतिहास है जिसे तारिख या तवारीख के नाम से जाना जाता है।

- तवारीख उन विद्वानों द्वारा लिखी गई थी जो अक्सर प्रशासन में महत्वपूर्ण पदों पर रहते थे।
- उनमें से बहुतों ने राजाओं से भरपूर पुरस्कार अर्जित करने के लिए उनकी नीतियों की प्रशंसा की।
- तवारीख के लेखक शहरों में रहते थे और जन्मसिद्ध अधिकार और लैंगिक भेदभाव के सिद्धांतों में विश्वास करते थे।
- जब 1236 में रजिया (इल्तुतमिश की बेटी) सुल्तान बनी, तो मिन्हाज-ए-सिराज ने लिखा कि हालांकि रजिया एक सक्षम शासक थी, लेकिन वह एक ऐसी महिला थी जिसे स्वतंत्र रूप से शासन करने का अधिकार नहीं होना चाहिए था। अंततः उसे 1240 में अपदस्थ कर दिया गया।



Razia Sultana - The first woman ruler of Delhi

दिल्ली सल्तनत का विस्तार

तेरहवीं शताब्दी के आरंभिक वर्षों में दिल्ली के सुल्तानों का शासन गैरीसनों (रक्षक सैनिकों की टुकड़ियों) के निवास के लिए बने मजबूत किलेबंद शहरों से परे शायद ही कभी फैला हो। शहरों से संबद्ध , लेकिन उनसे दूर भीतरी प्रदेशों पर उनका नियंत्रण न के बराबर था और इसलिए उन्हें आवश्यक सामग्री , रसद आदि के लिए व्यापार, कर या लूटमार पर ही निर्भर रहना पड़ता था।

दूसरा विस्तार सल्तनत की बाहरी सीमा पर हुआ। बारहवीं सदी के आखिरी दशक में बनी कुव्वत अल-इस्लाम मसजिद तथा उसकी मीनारें। यह जामा मसजिद दिल्ली के सुल्तानों द्वारा बनाए गए सबसे पहले शहर में स्थित है। इतिहास में इस शहर को "देहली-ए कुहना (पुराना शहर) कहा गया है। इस मसजिद का विस्तार इल्तुतमिश और अलाउद्दीन खिलजी ने किया। मीनार तीन सुल्तानों -कुतबुद्दीन ऐबक, इल्तुतमिश और फिरोज शाह तुगलक द्वारा बनवाई गई थी।

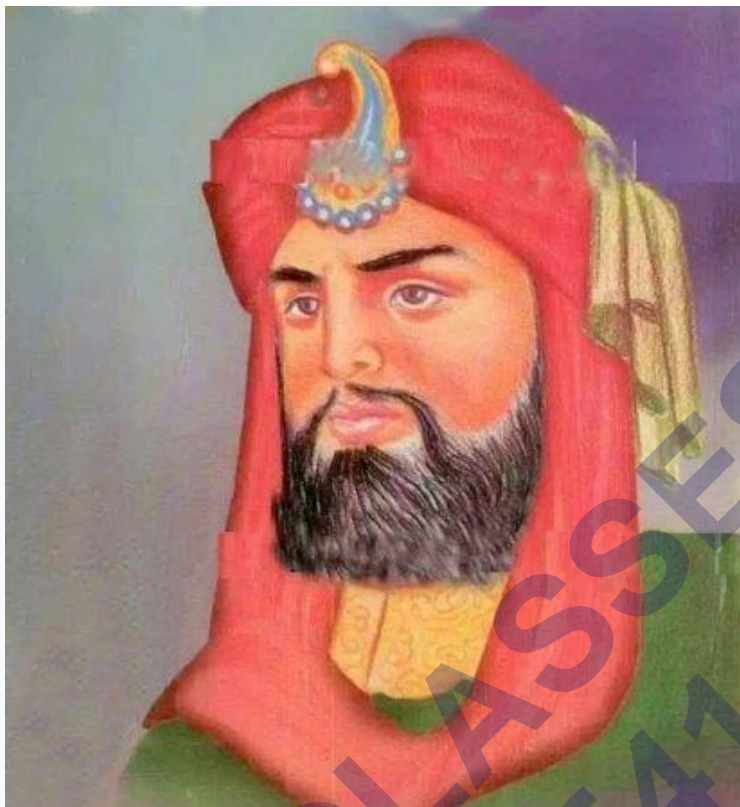
प्रारंभ में, दिल्ली के सुल्तानों का दिल्ली शहर से बाहर के क्षेत्रों पर नियंत्रण नहीं था। यह कई कारकों के कारण था जैसे:

- बंगाल और सिंध के गैरीसन कस्बों (सैनिकों के साथ एक गढ़वाली बस्ती) पर नियंत्रण हासिल करना सुल्तानों के लिए बहुत मुश्किल था क्योंकि खराब मौसम, लंबा रास्ता और लगातार विद्रोह साम्राज्य की स्थिरता को खतरे में डाल सकते थे।
- अफगानिस्तान से आए मंगोलों के हमलों से साम्राज्य को भी खतरा था।
- जब भी केंद्र में सुल्तानों की शक्ति कमजोर होती है तो मजबूत राज्यपाल हमेशा सत्ता पर कब्जा करने या विद्रोह करने के अवसरों की तलाश में रहते थे।

साम्राज्य का सुदृढ़ीकरण

बलबन, अलाउद्दीन खिलजी और मुहम्मद तुगलक के शासन के दौरान साम्राज्य को निम्नलिखित तरीकों से समेकित और विस्तारित किया गया था:

- शुरुआत में, सुल्तानों ने गैरीसन कस्बों और भीतरी इलाकों पर कब्जा कर लिया (एक शहर से सटे एक भूमि या एक बंदरगाह जो इसे वस्तुओं और सेवाओं के साथ आपूर्ति करता है)। इन अभियानों के दौरान साफ किए गए गंगा दोआब क्षेत्र के जंगल किसानों को खेती के लिए दे दिए गए।
- व्यापार मार्गों की रक्षा और क्षेत्रीय व्यापार को बढ़ावा देने के लिए कई नए किले और कस्बे बनाए गए।
- अलाउद्दीन खिलजी और मुहम्मद तुगलक ने दक्षिणी क्षेत्रों पर कब्जा करने के लिए बड़े सैन्य अभियान चलाए।
- मुहम्मद तुगलक के शासन के अंत तक, दिल्ली सल्तनत भारतीय उपमहाद्वीप के अधिकांश हिस्सों पर शासन कर रही थी।



ग्यासुद्दीन बलबन

साम्राज्य का प्रशासन

दिल्ली सल्तनत के विशाल क्षेत्रों का प्रबंधन करने के लिए, सुदृढ़ प्रशासनिक नीतियों का पालन किया गया। प्रशासन की कुछ मुख्य विशेषताएं थीं:

- आरंभिक वर्षों में कई दासों को महत्वपूर्ण प्रशासनिक पदों पर नियुक्त किया गया था। इन्हें फारसी में बंदगान के रूप में जाना जाता था और आमतौर पर सुल्तानों द्वारा इन पर भरोसा किया जाता था।
- खिलजी और तुगलकों ने भी कई गुलामों को महत्वपूर्ण पदों पर नियुक्त किया। हालाँकि, इसने अस्थिरता का तत्व भी पैदा किया क्योंकि दास अपने स्वामी के प्रति वफादार थे लेकिन अपने उत्तराधिकारियों के प्रति नहीं।
- इसने पुराने कुलीनों और नव नियुक्त कुलीनों के बीच एक दरार भी पैदा कर दी।
- सैन्य कमांडरों को भी विभिन्न क्षेत्रों के राज्यपाल के रूप में नियुक्त किया गया था।
- कभी-कभी, उन्हें इक्ता के रूप में जानी जाने वाली भूमि भी दी जाती थी और भूमि धारक को इक्तादार या मुक्ती के रूप में जाना जाता था।
- मुक्तियों ने अपने इक्ता में एक सेना और कानून-व्यवस्था बनाए रखी।

- एकत्र किए गए राजस्व की जांच के लिए विभिन्न लेखाकारों को नियुक्त किया गया था। एक इक्तादार एक निश्चित संख्या तक ही सैनिकों को रख सकता था।
- दिल्ली सल्तनत के तहत, अमीर और धनी जमींदारों की शक्तियाँ कम कर दी गईं और उन्हें करों का भुगतान करने के लिए मजबूर किया गया।
- अलाउद्दीन खिलजी और मुहम्मद तुगलक के अधीन, खराजी नामक खेती की भूमि पर करों का दावा किया जाता था, जो कि उपज का पचास प्रतिशत था।
- मवेशियों और घरों पर भी कर लगाया जाता था।

सिंध, दक्षिण भारत और बंगाल में कई राज्यों ने अपनी विजय के तुरंत बाद दिल्ली सल्तनत से बार-बार अपनी स्वतंत्रता प्राप्त की। सुल्तानों के लिए उनके दूर के स्थानों के कारण उन्हें प्रबंधित करना मुश्किल था।

जन्मसिद्ध अधिकार

जन्म के आधार पर विशेषाधिकार का दावा उदाहरण के लिए, लोग मानते थे कि कुलीन व्यक्तियों को, कुछ खास परिवारों में जन्म लेने के कारण शासन करने का अधिकार विरासत में मिलता है। मिन्हाज-ए-सिराज, ईश्वर ने जो आदर्श समाज व्यवस्था बनाई है उसके अनुसार महिलाओं को पुरुषों के अधीन होना चाहिए।

मसजिद

यह अरबी का शब्द है, जिसका शाब्दिक अर्थ – ऐसा स्थान जहाँ मुसलमान अल्लाह की आराधना में सजदा (घुटने और माथा टेककर) करते हैं। जामा मसजिद (या मसजिद-ए-जामी) वह मसजिद होती है, जहाँ अनेक मुसलमान एकत्र होकर साथ-साथ नमाज़ पढ़ते हैं। नमाज़ की रस्म के लिए एक विद्वान पुरुष को इमाम (नेता) के रूप में चुना जाता है। इमाम शुक्रवार की नमाज़ के दौरान धर्मोपदेश (खुतबा) भी देता है। नमाज़ के दौरान मुसलमान मका की तरफ़ मुँह करके खड़े होते हैं। मक्का की ओर की दिशा को 'किबला' कहा जाता है।

उस समय तीन तरह कर थे

1. कृषि पर, जिसे खराज कहा जाता था और किसान की उपज का लगभग पचास प्रतिशत होता था।
2. मवेशियों पर तथा
3. घरों पर।

अलाउद्दीन खिलजी की नीतियों का एक अनुमान

अलाउद्दीन खिलजी एक कुशल शासक था जिसने सफलतापूर्वक सल्तनत का प्रशासन किया। उनकी कुछ नीतियां थीं:

- उसने मंगोल आक्रमणों से निपटने के लिए एक बड़ी सेना खड़ी की। उन्होंने अपने सैनिकों के लिए सिरी के नाम से जाना जाने वाला एक भारी गैरीसन शहर भी बनाया।
- अपनी सेना को बनाए रखने के लिए, उसने गंगा नदी और यमुना नदी के बीच की उपजाऊ भूमि से कर वसूल किया।
- अलाउद्दीन खिलजी ने अपने सैनिकों को नकद भुगतान किया। अपने सैनिकों को सस्ती दरों पर उत्पाद खरीदने में सक्षम बनाने के लिए, उन्होंने दिल्ली और उसके आसपास वस्तुओं की कीमतें तय कीं। बाजारों पर कड़ी निगरानी रखी जाती थी और निश्चित मूल्य से अधिक मूल्य वसूलने वाले दुकानदारों और व्यापारियों को कड़ी सजा दी जाती थी।
- अलाउद्दीन खिलजी के शासनकाल को विभिन्न आर्थिक उपायों जैसे सस्ती कीमतों और माल की कुशल आपूर्ति के लिए याद किया जाता है। उसने अपने साम्राज्य को लगातार मंगोल खतरों से भी बचाया।



سلطان علاء الدین خلجی محمد شاہ اول (۶۹۵ھ - ق)
Sultan Aala-Ouddine Khildji (1295)

अलाउद्दीन खिलजी

मोहम्मद तुगलक की नीतियों का एक अनुमान

- मोहम्मद तुगलक ने अपने शासन के प्रारंभिक वर्षों में मंगोल सेना को हराया। अपनी सेना की जीत से प्रभावित होकर, उसने ट्रांसोक्सियाना पर हमले की योजना बनाई और इस उद्देश्य के लिए एक विशाल सेना खड़ी की।
- दिल्ली में एक गैरीसन शहर बनाने के बजाय, उसने अपनी राजधानी को दक्षिण में दौलताबाद में स्थानांतरित कर दिया। वहां उन्हें लोगों के कड़े विरोध का सामना करना पड़ा।
- अपनी विशाल सेना को बनाए रखने के लिए उसने करों में वृद्धि की। जैसे ही अकाल पड़ा, कई किसान करों का भुगतान करने के लिए मजबूर होने पर जंगलों या देश के अन्य हिस्सों में भाग गए।
- मोहम्मद तुगलक ने अपने सैनिकों को नकद भुगतान किया। कीमतें तय करने के बजाय, उन्होंने तांबे (सोने और चांदी नहीं) से बनी सांकेतिक मुद्रा की शुरुआत की। लोग इस मुद्रा पर विश्वास नहीं करते थे और आगे उन्होंने अपने घरों में नकली सिक्के ढाले। इससे राजस्व का भारी नुकसान हुआ।
- उनके प्रशासनिक उपाय सफल नहीं रहे। कश्मीर के लिए उनका सैन्य अभियान विनाशकारी निकला। जिन लोगों को दौलताबाद में स्थानांतरित करने के लिए मजबूर किया गया था, वे सुल्तान के कार्यों से नाराज थे। गंगा और यमुना क्षेत्रों में करों में वृद्धि के परिणामस्वरूप कई विद्रोह हुए। अंततः उसे सांकेतिक मुद्रा को भी त्यागना पड़ा।

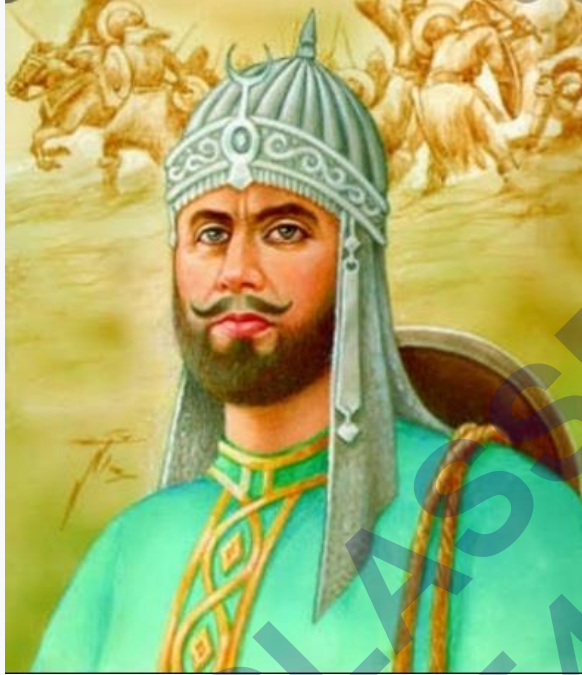


मोहम्मद बिन तुगलक

पंद्रहवीं और सोलहवीं शताब्दी में दिल्ली सल्तनत

दिल्ली सल्तनत के पिछले कुछ सौ वर्षों में, बंगाल, गुजरात, राजस्थान और जौनपुर जैसे कई राज्य स्वतंत्र हो गए थे। बाद में तुगलक, सैय्यद और लोदी राजवंशों ने दिल्ली और आगरा पर शासन किया। इस अवधि के दौरान, राजपूतों और अफगान रईसों का उदय हुआ। इस समय कई छोटे राज्य शक्तिशाली हो गए। शेर शाह सूरी जो बिहार में एक छोटे से क्षेत्र का प्रबंधन

कर रहा था, बाद में मुगल सम्राट हुमन्यू को हरा दिया। शेर शाह सूरी एक शानदार प्रशासक था जिसकी प्रशासनिक नीतियों का पालन अकबर ने किया था।



शेर शाह सूरी

धार्मिक और स्थापत्य प्रयास

दिल्ली सल्तनत के शासकों ने कई मस्जिदों और इमारतों का निर्माण किया। इसने उन्हें दावा किया कि वे इस्लाम और मुसलमानों के रक्षक थे। एक मस्जिद को अरबी में 'मस्जिद' कहा जाता है और वह जगह है जहाँ एक मुसलमान नमाज़ अदा करता है। नमाज के दौरान एक मुसलमान मक्का की ओर मुंह करके खड़ा होता है। भारत में यह पश्चिम की ओर है। इसे क़िबला कहते हैं।

इस समय के प्रसिद्ध वास्तुशिल्प में से एक कुतुब मीनार थी। इसका निर्माण ऐबक द्वारा शुरू किया गया था लेकिन इल्तुतमिश द्वारा पूरा किया गया था।



कुतुब मिनार

दिल्ली के सुल्तानों के बारे में जानकारी-कैसे

अभिलेख , सिक्कों और स्थापत्य (भवन निर्माण कला) के माध्यम से काफ़ी सुचना मिलती है , मगर और भी महत्वपूर्ण वे 'इतिहास ' तारीख (एकवचन) /तवारीख (बहुवचन) हैं जो सुल्तानों के शासनकाल में , प्रशासन की भाषा फ़ारसी में लिखे गए थे। तवारीख के लेखक सचिव , प्रशासक , कवि और दरबारियों जैसे सुशिक्षित व्यक्ति होते थे जो घटनाओं का वर्णन भी करते थे और शासको को प्रशासन संबंधी सलाह भी देते थे। वे न्यायसंगत शासन के महत्त्व पर बल देते थे। सैनिकों को वेतन दिया जाता थाकिसान भी राजस्व तभी चुकाते जब वे खुशहाल और प्रसन्न हो।

अफ़्रीकी देश

मोरक्को से चौदहवीं सदी में भारत आए यात्री इबन बतूता ने बतलाया है की सरदार की रक्षा-व्यवस्था के बारे में। दिल्ली सल्तनत ने 1526 तक दिल्ली तथा आगरा पर सैयद तथा लोदी वंशों का राज्य रहा। इसके बाद धीरे-धीरे छोटे-छोटे शक्तिशाली शासको क उदय हुआ जैसे अफ़गान , राजपूत , शेरशाह सूरी , और मुग़ल साम्रज्य।

NCERT SOLUTIONS

प्रश्न (पृष्ठ संख्या 43)

प्रश्न 1 दिल्ली में पहले- पहल किसने राजधानी स्थापित की ?

उत्तर – तोमर राजपूतो ने पहले – पहल दिल्ली में राजधानी स्थापित की। बारहवीं सदी के मध्य में तोमरो को अजमेर के चौहानों (जिन्हें चाहमान नाम से भी जाना जाता है) ने परास्त किया। तोमरो और चौहानों के राज्यकाल में ही दिल्ली वाणिज्य का एक महत्वपूर्ण केंद्र बन गया।

प्रश्न 2 दिल्ली के सुलतानों के शासनकाल में प्रशासन की भाषा क्या थी ?

उत्तर – दिल्ली के सुलतानों के शासनकाल में प्रशासन की भाषा फ़ारसी थी। उस समय त्वारीख के लेखक, सचिव, प्रशासक, कवि और दरबारियों जैसे सुशिक्षित व्यक्ति होते थे जो घटनाओ का वर्णन भी करते थे और शासको को प्रशासन संबंधी सलाह भी देते थे।

प्रश्न 3 किसके शासन के दौरान सल्तनत का सबसे अधिक विस्तार हुआ ?

उत्तर – सल्तनत का सबसे अधिक विस्तार अलाउद्दीन खिलजी और मुहमद तुगलक के शासन के दौरान हुआ। इस समय बहुत सारी चुनौतियों का सामना करना पड़ता था। इन चुनौतियों के चलते सल्तनत बड़ी मुश्किल से शासन काल को बचाए हुई थी।

प्रश्न 4 इब्न बतूता किस देश से भारत में आया था ?

उत्तर – इब्न बतूता मोरक्को (उत्तर अफ्रीका) देश का यात्री था। इब्न बतूता की इच्छा बचपन से ही मुसलमानों के धार्मिक स्थलों को देखने की रही और यही कारण बना की वो मुसलामानों में से सबसे महान यात्री था। इब्न बतूता तुगलक वंश के शासक मुहम्मद बिन तुगलक (1325-1351 ईस्वी) के शासनकाल में भारत आया था।

प्रश्न (पृष्ठ संख्या 44)

प्रश्न 5 'न्याय चक्र के अनुसार सेनापतियों के लिए किसानों के हितों का ध्यान रखना क्यों जरूरी था ?

उत्तर - तेरहवीं सदी के इतिहासकार फ़ख़ ए मुदब्बीर ने लिखा था कि न्याय चक्र के अनुसार सेनापतियों के लिए किसानों के हितों का ध्यान रखना इसलिए जरूरी था क्योंकि वेतन आता है किसानों से एकत्रित किये गए राजस्व से और किसान भी राजस्व तभी चुका सकते थे जब वे खुशहाल और प्रसन्न हों। और ऐसा तभी हो सकता है जब राजा ईमानदार और न्याय प्रशासन को बढ़ावा दे। इसलिए सेनानायक किसानों को सुरक्षा और संरक्षण प्रदान करते थे। संपन्न किसान भूमि कर देते थे। इन करों से ही सेना को वेतन मिलता था।

प्रश्न 6 सल्तनत की भीतरी और बाहरी सीमा से आप क्या समझते हैं ?

उत्तर - सल्तनत की भीतरी सीमाओं से अभिप्राय यह है कि गैरिसन शहरों की पृष्ठभूमि में स्थित भीतरी क्षेत्रों की स्थिति को मजबूत करना। ये गंगा - यमुना के दोआब से जंगलों तक फैले हुए थे। व्यापार मार्गों की सुरक्षा और क्षेत्रीय व्यापार की उन्नति के खातिर नए किले, गैरिसन शहर बनाए और बसाए गए। सल्तनत की बाहरी सीमा से अभिप्राय उस क्षेत्र से था जो दिल्ली से बहुत दूर अर्थात् दक्षिण भारत में पड़ता था। यह अलाउद्दीन खिलजी के शासनकाल में दक्षिण भारत को लक्ष्य करके सैनिक अभियान शुरू करने के लिए बनाए गये थे।

प्रश्न 7 मुक्ति अपने कर्तव्यों का पालन करें, यह सुनिश्चित करने के लिए कौन-कौन से कदम उठाए गए थे ? आपके विचार में सुलतान के आदेशों का उल्लंघन करना चाहने के पीछे उनके क्या कारण हो सकते थे ?

उत्तर - मुक्ति अपने कर्तव्यों का पालन करे यह सुनिश्चित करने के लिए निम्नलिखित कदम उठाए गए थे जो कि इस प्रकार हैं:- मुक्ति लोगों द्वारा एकत्रित किए गए राजस्व की रकम का हिसाब लेने के लिए राज्य द्वारा लेखा अधिकारी नियुक्त किए जाते थे। इस बात का भी ध्यान रखा जाता था कि मुक्ति राज्य द्वारा निर्धारित कर ही वसूले और तय संख्या के अनुसार सैनिक रखे। मुक्ति लोगों पर काबू रखने का सबसे प्रभावी तरीका यह था कि उनका पद वंश परम्परा से न चलें और इन्हें कोई भी इक्ता थोड़े थोड़े समय के लिए ही मिले जिसके बाद उनका स्थानान्तरण कर दिया जाए। मुक्ति लोग सुलतान के आदेशों की अवहेलना करते थे। धन तथा सैन्य संचालन मुक्ति लोगों के हाथ में होता था। इसी कारण मुक्ति लोग सुलतान के आदेशों का उल्लंघन करते थे।

प्रश्न 8 दिल्ली सल्तनत पर मंगोल आक्रमणों का क्या प्रभाव पड़ा ?

उत्तर - दिल्ली सल्तनत पर जैसे ही मंगोलों के धावे बढ़ गए, इससे मजबूर होकर दोनों सुल्तानों को स्थानीय विशाल सेना खड़ी करनी पड़ी। अलाउद्दीन खिलजी ने अपने सैनिकों के लिए सीरी नामक एक नया गैरिसन शहर बनाया। मुहम्मद तुगलक ने अपने सैनिकों के लिए दिल्ली के चार शहरों में से सबसे पुराने शहर देहली - ए - कुहना में जगह बनवाई। सैनिकों के खाने के लिए उन्होंने किसानों की पैदावार का 50 प्रतिशत हिस्सा कर के तौर पर तय कर दिया था। सैनिकों को इक्ता के स्थान पर नकद वेतन देने का तय किया। व्यापारियों द्वारा दी जाने वाली चीजों की कीमतों को नियंत्रित किया ताकि वे अपने सैनिकों की सभी आवश्यकताएं पूरी कर सकें। लेकिन मुहम्मद तुगलक ने आज की मुद्रा की तरह कुछ टोकन चलाए जो कि नकली भी आसानी से बनाए जा सकते थे। अलाउद्दीन खिलजी के प्रशासनिक कदम सफल रहे और मंगोल आक्रमण में जीता भी लेकिन मुहम्मद तुगलक हार गया और उसे अपनी सेना भंग करनी पड़ी।